स्कैम...बिना वैक्सीन लगवाए क्यों आ रहे हैं सर्टिफिकेट

लोगों ने पुलिस, जिला प्रशासन, गृह मंत्रालय को भेजीं शिकायतें, कोई सुनवाई नहीं

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: शहर और गांव के तमाम वैक्सीन सेंटरों पर वैक्सीन उपलब्ध नहीं है और लोग आनलाइन बुकिंग नहीं कर पा रहे हैं। जिनकी बुकिंग हो भी जाती है, जब वे सेंटर पर पहुंचते हैं तो कहा जाता है कि वैक्सीन खत्म हो चुकी है। लेकिन इस मामले में जो सबसे बड़ा आरोप लग रहा है वो ये है कि लोगों को बिना वैक्सीन लगवाए ही वैक्सीन लगवाने का सर्टिफिकेट प्राप्त हो रहा है। जबकि वैक्सीन का असल में लगाए जाने का डेटा सरकार के लिए बहुत जरूरी है। इस मामले में गहन जांच ही रहस्य से पर्दा उठा सकती है कि जिन्हें बिना लगवाए वैक्सीन सर्टिफिकेट मिल रहा है, वो वैक्सीन कहां जा रही है। क्या उन्हें भी अवैध रूप से ब्लैक मार्केट में बेचा जा रहा है।

फरीदाबाद के हनी शर्मा ने मजदूर मोर्चा को बताया कि वैक्सीन लगवाने की उनकी बुकिंग 3 मई की थी। वो किसी वजह से वैक्सीन लगवाने नहीं जा सके। लेकिन रात में ही उनके पास वैक्सीन लगवाने का सर्टिफिकेट आनलाइन आ गया। सुबह जब वो वैक्सीनेशन सेंटर पर पहुंचे तो डॉक्टर ने बताया कि ऐसा गलती से हुआ होगा। डॉक्टर ने दूसरी जगह से वैक्सीन का इंतजाम कर हनी शर्मा को वैक्सीन लगाई और विदा कर दिया। ऐसा इसलिए हो सका, क्योंकि हनी शर्मा पढ़े लिखे थे। सजग थे इसलिए डॉक्टर उन्हें मना नहीं कर सका।

हर व्यक्ति के साथ हनी शर्मा जैसा बर्ताव डॉक्टर या अन्य स्टाफ नहीं कर रहा है। तीस्ता घोष ने 6 मई के लिए बुकिंग कराई

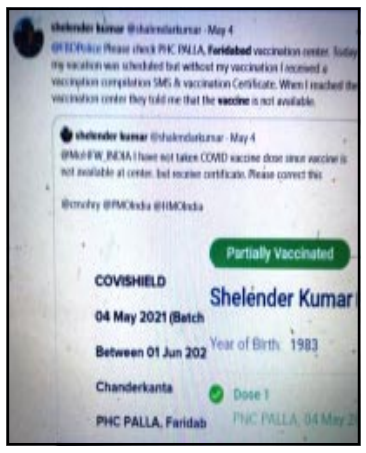

थी। लेकिन वो जा नहीं सकीं। शाम को उनके पास वैक्सीन लगने का सर्टिफिकेट आ गया। अब वो सरकारी अधिकारियों से लिखकर पूछ रही हैं कि यह कैसे संभव है लेकिन उन्हें बताने वाला कोई नहीं है। एसके शर्मा के साथ भी यही घटना हुई। शर्मा ने सीधे फरीदाबाद पुलिस को टैग करते हुए लिखा है कि यह अवैध है। उन्होंने वैक्सीन लगवाई नहीं, लेकिन सर्टिफिकेट कैसे आ गया। कृपया इसकी जांच करें। गौरव के साथ तो और भी बुरा हुआ है। गौरव ने बताया कि वो नोएडा में पिछले तीन हफ्ते से अपने घर से ही नहीं निकले हैं, लेकिन 6 मई को उन्हें एसएमएस मिला कि उन्हें वैक्सीन की दूसरी डोज फरीदाबाद में लगा दी गई है। गौरव ने बताया कि भारत सरकार की वेबसाइट कोविन उन्हें पूरी तरह वैक्सीनेटेड बता रही है। जबकि दूसरी डोज उन्हें लगी ही नहीं। गौरव ने भी इस मामले में केन्द्रीय गृह मंत्रालय को लिखा है।

शैलेन्द्र कुमार ने भी फरीदाबाद पुलिस से शिकायत की है कि वो पीएचसी पल्ला (फरीदाबाद) की जांच करें। शैलेन्द्र ने बताया कि उन्हें और उनकी पत्नी चन्द्रकांता को 4 मई का स्लाट मिला था। लेकिन इससे पहले कि वो पल्ला पीएचसी पर पहुंच पाते, उनके पास दोनों को वैक्सीन लगने का सर्टिफिकेट आ गया।उनके पास आए संदेश में कहा गया है कि उन्हें पल्ला पीएचसी पर कोविशील्ड वैक्सीन की पहली डोज लगाई जा चुकी है। शैलेन्द्र ने फरीदाबाद पुलिस के अलावा केन्द्रीय गृह मंत्रालय को भी इस मामले की जानकारी दी है।

वैक्सीन लगाने का कमांड

किसी भी वैक्सीन सेंटर पर वैक्सीन लगाने के बाद वहां बैठा स्टाफ या डॉक्टर जब तक कम्प्यूटर पर वैक्सीन लगने की पुष्टि एक कमांड अपने हाथ से दबाकर नहीं करता है, तब तक वैक्सीन का लगना नहीं माना जाता है। उस कमांड को दबाते ही वैक्सीन लगने की पुष्टि हो जाती है और खुद ही सर्टिफिकेट जनरेट हो जाता है। यानी जितने लोगों को ऐसे फर्जी सर्टिफिकेट पहुंच रहे हैं, वो बिना कमांड दिए संभव नहीं है। इसका मतलब ये है कि या तो कम्प्यूटर में कोई एरर है या फिर उस वैक्सीन को ब्लैक मार्केट में बेचा जा रहा है। बहुत कम ही लोग इस मुद्दे को उठा रहे हैं, इसलिए स्टाफ इनकी कालाबाजारी आसानी से कर लेता है। जो जागरूक नागरिक वैक्सीनेशन सेंटर पर शोर मचाते हैं, उन्हें चुपचाप वैक्सीन लगा दी जाती है। बहरहाल, यह स्थिति एक बड़े स्कैम की ओर इशारा कर रही है।

मेदांता में इलाज पाने की दो शर्तें, मोटा पैसा और बड़ा रसूख ...

गुड़गांव (म.मो) शहर के पाँच सितारा अस्पताल में कोरोना के नाम पर क्या अंधेरगर्दी है ये जानना हो तो वहाँ भर्ती मरीज से पूछिये। हरियाणा के गृह मंत्री अनिल विज ने बीती तीन तारीख को बड़बोलेपन की अपनी पार्टी नीति के तहत कहा कि मरीजों से इलाज के नाम पर अधिक पैसे वसूलने वाले अस्पतालों पर कड़ी कार्यवाही करेंगे। इस प्रवचन के बाद आज तक कितने अस्पतालों पर कार्यवाही हुई इसका जो भी रिकार्ड सामने आए पर पर यह तय है कि इसमे किसी भी रसूखदार अस्पताल का कहीं कोई रिकार्ड नहीं मिलेगा।

28 अप्रैल को कोरोना से पीड़ित फरीदाबाद निवासी रमेश की हालत अचानक खराब होने लगी, अपनी ऊंची पहुँच से रमेश को आनन-फानन में मेदांता अस्पताल गुरुग्राम में दाखिला मिल गया। अस्पताल पहुँच कर रमेश ने पाया कि इलाज के नाम पर वार्ड में न तो आक्सिजन देने की ही सुचारु व्यवस्था है न ही भाप और नैब्यूलाइजर मशीन की। पूरे दिन में बेसिक दवा देने के अलावा एक बार भी किसी डॉक्टर ने उस वार्ड में विजिट नहीं की। इस बीच रमेश का कई बार ब्लड सैम्पल लिया गया पर क्यों इसकी उन्हे कोई जानकारी नहीं दी गई। रमेश ने बताया कि अस्पताल में फैली अव्यवस्था को देख कर उन्हे लगा कि यहाँ तो वह बच ही नहीं पाएंगे।

बिना किसी चिकित्सक की विजिट के केवल मेडिकल पेरा मेडिकल स्टाफ के बूते वार्ड में मरीजों को रखा गया है और कोविड के हालत में बेसिक सुविधा तक दे पाने में ये पाँच सितारा अस्पताल असमर्थ

है। यह देख कर एक दिन बाद ही जब रमेश ने घर जाने का फैसला किया तो अस्पताल ने 42 हजार का मोटा बिल थमा दिया जिसमे डॉक्टर की दो बार विजिट भी बताई जबकि रमेश के अनुसार एक बार भी कोई चिकित्सक उन्हे देखने नहीं आया। साथ ही रमेश ने कहा, क्योंकि वह सीजीएचएस के तहत अस्पताल में भर्ती हुए थे इसलिए बिल इतना कम बना अन्यथा रकम लाख तक भी जा सकती थी।

कोरोना से अत्यंत पीड़ित रमेश अस्पताल की अव्यवस्था से अधिक डरे और घर की तरफ भागे जबकि उनकी अवस्था इस लायक नहीं थी। घर आने के दो दिन बाद ही उनकी स्थिति बद्द से बद्दतर होने लगी और कहीं और चिकित्सीय सुविधा न मिलने के कारण फिर से मेदांता में जाना पड़ा। हाँ, इस बार उन्होंने अपनी मजबूत पृष्ठभूमि को मजबूती से प्रयोग किया है जिसका परिणाम है कि अब उन्हे डॉक्टर व्यक्तिगत रूप से आकर देखता है और इलाज करता है। यानि मोटा पैसा चुकाने के बाद रसूकदार होना और रसूक का इस्तेमाल करना एकमात्र शर्त है इलाज पाने की।

यह जग-जाहिर है कि इस आपदा में सरकारों से लेकर व्यापारी और अस्पताल से लेकर शमशान तक सभी ने अपने लिए प्रधानमंत्री के बताए अनुसार अपने तरह से अवसर तलाशे हुए हैं। गाहे बगाहे अखबार में खबर भी छपती है कि अमुक एम्बुलेंस या दवा की कालाबाजारी करने वाले को पुलिस ने पकड़ा, पर आज तक एक भी खबर ऐसी नहीं आई कि निजी अस्पतालों के माफियाओं पर कभी शासन-प्रशासन ने हाथ डाला हो। इसके बावजूद गृह मंत्री अनिल विज की लफ्फाजियाँ हवा में हैं पर जमीन पर मेदांता जैसे अस्पताल के लिए केवल आपदा में अवसर ही अंतिम सत्य है।

28 जुलाई,1966 - 2 मई, 2021

दुःखद समाचार

नहीं रहे मनोज कुमार झा

1990 के दशक में 'मजदूर मोर्चा' से जुड़े रहे थे। दैनिक भास्कर (प्रिन्ट) व बाद में भोपाल स्थित भास्कर डिजिटल में समाचार सम्पादक रहे। कुछ माह जनसत्ता डिजिटल में काम करने के बाद पंजाब केसरी जालंधर डिजिटल व प्रिंट दोनों में काम किया। बीते दो वर्ष से वो फरीदाबाद में घर से ही एक डिजिटल मीडिया के लिए काम कर रहे थे। वे जहां भी रहे 'मजदूर मोर्चा' के लिए निरन्तर लिखते रहे।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया से इतिहास में एमए गोल्ड मेडल के साथ पास किया था। कहानी और कविता लेखन में भी उन्हें अच्छी महारत हासिल थी। अनेक राष्ट्रस्तरीय पत्रिकाओं में अक्सर छपते रहे। उनके निधन से 'मजदूर मोर्चा' को अपूर्णीय क्षति पहुंची है।

SOS

आज मजदूर मोर्चा अपने कठिनतम दौर से गुजर रहा है। यदि समय रहते सुधी पाठकों का सहयोग न मिल पाया तो इस निर्भीक एवं जुझारू आवाज का जीवित रहना दूभर हो जायेगा। इसलिये पाठकों से विनम्र निवेदन है कि यथाशक्ति आर्थिक सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या-451102010004150
IFSC Code : UBIN0545112
Union Bank of India, Sector-7, Faridabad

ओज़ोन पार्क के लोगों ने अपना कोविड सेंटर शुरू किया

हरियाणा सरकार के मुँह पर तमाचा, गुड़गाँव में भी पहल

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

फ़रीदाबाद हरियाणा सरकार ने पिछले सात साल में कोई नया मेडिकल इन्फ़्रास्ट्रक्चर खड़ा नहीं किया। यही वजह है कि पूरी व्यवस्था चरमरा गई। इसी से सबक़ लेते हुए ग्रेटर फ़रीदाबाद और गुड़गाँव की सोसाइटियों में अपना कोविड सेंटर बनाने की मुहिम शुरू हो गई है। ग्रेटर फ़रीदाबाद का ओज़ोन पार्क सोसाइटी में ऐसी ही पहल मंगलवार को हुई।

सोशल एक्टिविस्ट और ओज़ोन पार्क के निवासी रिटायर्ड विंग कमांडर सतिंदर दुग्गल ने बताता कि हमारी सोसाइटी में छह बिस्तरों वाले कोविड आइसोलेशन-कम-केयर सेंटर की शुरुआत की गयी। इस सेंटर में ऑक्सीजन सिलेंडर, व्हील चेयर समेत सभी व्यवस्थाएँ हैं। एक नर्सिंग असिस्टेंट ऑन कॉल भी उपलब्ध कराया गया है जो ना सिर्फ़ ऑक्सीजन सिलेंडर का संचालन देखेगा बल्कि इंजेक्शन देने व ब्लड प्रेशर लेने के साथ साथ अन्य नर्सिंग असिस्टेंट के काम भी देखेगा।

उन्होंने बताया कि मरीज़ों की सुविधा व इलाज को देखते हुए उनके लिए एक छोटा सा लॉन भी है। यहां रहने वाले दो डॉक्टर भी इस सेंटर में ऑन कॉल सेवाए देंगे।

महिला शक्ति का योगदान

मरीज़ों व उनके घरवालों के लिए सोसाइटी में रहने वाली महिला कार्यकर्ता विम्मी नेगी व दीपशिखा मुफ़्त खाना बनाकर वितरण कर रही हैं। जिसमें सुबह का नाश्ता, दोपहर व रात का खाना शामिल है।

इस सेंटर के लिए भरे हुए ऑक्सीजन सिलेंडर देने का ज़िम्मा एक और महिला कार्यकर्ता नेहा कुमार ने उठा रखा है जो स्वयं प्लांट से सिलेंडर भरवाने व सेंटर व सोसाइटी में पहुँचाने का काम कर रही हैं। इसी तरह सोसाइटी में ही रहने वाली एक और महिला डॉक्टर अदिति अपनी सेवाएँ दे रही हैं।

इस कोविड सेंटर में मनीष बंसल ने भी 50 किलो का भरा हुआ ऑक्सीजन सिलेंडर दान दिया व सिलेंडर वो खुद लाइन में खड़े होकर भरवाते हैं।

गुड़गाँव में भी पहल

सुशांत लोक समेत गुड़गाँव की कई सोसाइटियों में वहाँ की आरडब्ल्यूए ने अपना कोविड सेंटर शुरू करने की पहल हुई है। इनमें विशेषज्ञ डॉक्टरों की भी सेवाएँ ली गई हैं। बता दें कि एनसीआर में सबसे ज़्यादा मौतें गुड़गाँव में ही हुई हैं।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. राम खिलावन-बल्लभगढ़ बस स्टैंड के सामने 9891164794
6. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
7. सुरेन्द्र बघेल - बस अड्डा होडल - 9991742421